http://www.jainkosh.org

सहजानंद शास्त्रमाला

शिशु धर्मबोध

भाग-2

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

http://sahjanandvarnishastra.org/

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

ॐ

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

शिशु धर्मबोध

(द्वितीय भाग)

लेखकः—

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी
"श्रीमत्सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक—

मंत्री, श्री सहजानन्द शास्त्रमाला
१८५ ए, रणजीतपुरी, सदर मेरठ (उत्तर प्रदेश)

संस्करण २७००

सन् १९८७

मूल्य ५० पैसे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

आत्मकीर्तन

अध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ पूज्य श्री मनोहर जी वर्णी

श्री "मत्सहजानन्द" महाराज द्वारा विरचित

—:※:—

हूं स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता द्रष्टा आतम राम ॥टेक॥

१

मैं वह हूं जो हैं भगवान । जो मैं हूं वह हैं भगवान ॥
अन्तर यही ऊपरी जान । वे विराग यहं रागवितान ॥

२

मम स्वरूप है सिद्ध समान । अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान ॥
किन्तु आशावश खोया ज्ञान । बना भिखारी निपट अजान ॥

३

सुख-दुख दाता कोई न आन । मोह राग रुष दुखकी खान ॥
निजको निज परको पर जान । फिर दुखका नहिं लेश निदान ॥

४

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम । विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ॥
राग त्यागि पहुंचूं निजधाम । आकुलता का फिर क्या काम ॥

५

होता स्वयं जगत परिणाम । मैं जगका करता क्या काम ॥
दूर हटो परकृत परिणाम । "सहजानन्द" रहूं अभिराम ॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

शिशु धर्मबोध द्वितीय भाग

पाठ १

देवस्तुति (श्री पं० दौलतरामजी द्वारा रचित)

सर्व प्रथम "ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु" कहकर णमोकार मंत्र पढ़ें, पश्चात् चत्तारि दंडक पढ़ें, फिर देवस्तुति पढ़ें।

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित अरि रज रहस विहीन ॥१॥

पद्धरि छन्द

जय वीतराग विज्ञानपूर। जय मोहतिमिर को हरनसूर।
जय ज्ञान अनन्तानन्त धार। दृगसुखवीरजमंडित अपार ॥१॥
जय परमशान्तमुद्रासमेत। भविजनको निज अनुभूति हेत।
भविभागन बच योगे वशाय। तुम ध्वनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ॥२॥
तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक। प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जग भूषण दूषणवियुक्त। सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ॥३॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप। परमात्म परमपावन अनूप।
शुभ अशुभविभाव अभाव कीन। स्वाभाविकपरिणतिमय अछीन ॥४॥
अष्टादशदोषविमुक्त धीर। स्वचतुष्टयमय राजत गंभीर।
मुनि गणधरादि सेवत महंत। नव केवललब्धिरमा धरन्त ॥५॥
तुम शासन सेय अमेय जीव। शिव गये जां हैं जैहै सदीव।
भव सागर में दुःख छारवारि। तारनको और न आप टारि ॥६॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

यह लखि निजदुःखगदहरणकाज, तुमही निमित्तकारण इलाज ।
जाने तातैं मैं शरण आय, उचरौं निजदुःख जो चिर लहाय ॥७॥
मैं भ्रमयौ अपनपौ विसरि आप, अपनाये विधिफल पुण्यपाप ।
निजको परको करता पिछान, परमें अनिष्टता इष्ट ठान ॥८॥
आकुलित भयौ अज्ञान धारि, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तनपरिणतिमें आपौ चितारि, कबहूं न अनुभवौ स्वपदसार ॥९॥
तुमको बिन जाने जो क्लेश, पाये सो तुम जानत जिनेश ।
पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धरि धरि मर्‌यो अनन्तबार ॥१०॥
अब काललब्धि बलतैं दयाल, तुम दर्शन पाय भयौ खुशाल ।
मन शांत भयो मिट सकल द्वन्द, चाख्यो स्वातमरस दुखनिकंद ॥११॥
तातैं अब ऐसी करहु नाथ, बिछुरैं न कभी तुव चरण साथ ।
तुव गुणगणको नहिं छेव देव, जगतारणको तुव विरद एव ॥१२॥
आतमके अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूँ आपमें आप लीन, सो करहु होउं ज्यौं निजाधीन ॥१३॥
मेरे न चाह कछु और ईश, रत्नत्रयनिधि दीजे मुनीश ।
मुझ कारज के कारण सु आप, शिव करहु हरहु मम मोहताप ॥१४॥
शशि शांतिकरण तप हरणहेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पियूष ज्यों रोग जाय, त्यौं तुव अनुभवतैं भव नशाय ॥१५॥
त्रिभुवन तिहुंकाल मंझार कोय, नहिं तुम बिन निजसुखदाय होय ।
मो उर यह निश्चय भयौ आज, दुःखजलधिउतारण तुम जहाज ॥१६॥

दोहा

तुम गुणगणमणिगणपती गणत न पावहिं पार ।
"दौल" स्वल्पमति किमु कहै नमहुँ त्रियोग सम्हार ॥१॥

http://www.jainkosh.org

प्रश्नावली

१—मन्दिर में जाकर स्तुति पढ़ने से पहिले क्या कहना चाहिये ?
२—यह स्तुति किनकी बनाई हुई है ?
३—"जय परम शान्त" से लेकर 'परिणतिमय अछीन" तक पढ़ो ।
४—इस स्तुति के अन्त के दो छन्द व दोहा पढ़ो ।
५—स्तुति पढ़ने से क्या लाभ है ?

—:o:—

पाठ २

जीव व जीव के भेद

पदार्थ २ तरह के होते हैं—१. जीव, अजीव ।

जीव—उन्हें कहते हैं जिनमें जानने देखने की शक्ति हो। जैसे—घोड़ा, बैल, कीड़ा, मकोड़ा, पेड़, पृथ्वी, पानी, पक्षी, देव, मनुष्य, नारकी आदि ।

अजीव—उन्हें कहते हैं जिनमें जानने देखने की शक्ति न हो। जैसे—दवात, कलम, सन्दूक, टोपी, रोटी आदि ।

जीव के भेद

जीव २ प्रकार के होते हैं—१. मुक्त जीव, २. संसारी जीव ।

मुक्त जीव—उन्हें कहते हैं जो कर्मों से छूट गये हैं, जिन्होंने सदा के लिये सच्चा सुख पा लिया है, ये संसार (गति) में लौट कर कभी नहीं आते, इन्हें सिद्ध भी कहते हैं। अरहंत भगवान् को जीवन्मुक्त कहते है ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

संसारी जीव—उन्हें कहते हैं जो संसार में घूमकर जन्म मरण के दु:ख उठाते हों।

संसारी जीव के भेद

संसारी जीव २ प्रकार के होते हैं:— १. त्रस जीव, २. स्थावर जीव।

त्रस जीव—दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय चार इन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवों को त्रस कहते हैं। जैसे—लट, चिउंटी, भौंरा, बैल, पक्षी, मनुष्य, देव, नारकी आदि।

स्थावर जीव—एकेन्द्रिय जीव को स्थावर कहते हैं।

स्थावर जीव के भेद

स्थावर जीव ५ प्रकार के होते हैं— १. पृथ्वीकायिक, २. जलकायिक, ३. अग्निकायिक, ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक।

पृथ्वीकायिक जीव—उन्हें कहते हैं जिनका पृथ्वी ही शरीर हो, जैसे—मिट्टी, पत्थर, सोना, चांदी, लोहा, भोडल आदि। खान से निकले हुये ये अजीव हैं।

जलकायिक जीव—उन्हें कहते हैं जिनका जल ही शरीर हो। जैसे—पानी, ओला, ओस, वर्फ आदि।

अग्निकायिक जीव—उन्हें कहते हैं जिनका अग्नि ही शरीर हो। जैसे—आग, बिजली आदि।

वायुकायिक जीव—उन्हें कहते हैं जिनका वायु ही शरीर हो। जैसे—हवा, आंधी वगैरह।

वनस्पतिकायिक जीव—उन्हें कहते हैं जिनका वनस्पति ही शरीर हो। जैसे—पेड़, पत्त, फल, फूल वगैरह।

वनस्पतिकाविक जीव के दो भेद हैं – १. साधारण, २. प्रत्येक।

साधारण वनस्पति का शरीर हमें आंखों से नहीं दिख सकता, ये जीव एक बार नाड़ी चलने के समय में १८ बार जन्म मरण करते हैं।

प्रत्येक वनस्पति हरित वनस्पति को कहते हैं।

प्रत्येक वनस्पति के दो भेद है—साधारणसहित प्रत्येक (सप्रतिष्ठित प्रत्येक), २. साधारणरहित प्रत्येक (अप्रतिष्ठित प्रत्येक)।

साधारणसहित प्रत्येक (सप्रतिष्ठित प्रत्येक)— मूली, आलू, गाजर, शकरकन्द, पालक के पत्ते आदि हैं।

साधारणरहित प्रत्येक (अप्रतिष्ठित प्रत्येक)—आम, नींबू, खरबूजा, संतरा, मेथी की भाजी, तुरई आदि हैं।

धर्मात्मा पुरुष सप्रतिष्ठित प्रत्येक को नहीं खाते हैं, क्योंकि इनके खाने में अनंत स्थावर जीवों की हिंसा होती है।

प्रश्नावली

१—जीव किसे कहते हैं ? तुम मुक्त जीव हो या संसारी जीव ?
२—स्थावर जीव कितने तरहके होते हैं ? नाम बताओ।
३—अग्निकायिक जीव किसे कहते हैं ? दृष्टान्त में ३ नाम बताओ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

४—साधारण वनस्पति किस स्थावर का भेद है ?
५—साधारण वनस्पति तुम्हें आंखों से दिखाई देता है या नहीं ?
६—आलू, शकरकन्द, तुरई, आम ये कौनसी वनस्पति हैं ?
७—बालक, ओस, कीड़ा, बैल, मुक्तजीव, दवात, कुर्सी, ततइया, रोटी पेड़, मिट्टी इनमें कौन त्रस है और कौन स्थावर है ?

—:०:—

पाठ ३

इन्द्रिय व इन्द्रियों के अनुसार जीवों के भेद

इन्द्रिय—उन्हें कहते हैं जिनसे संसारी जीव की पहिचान हो।

इन्द्रियां ५ होती हैं— १. स्पर्शन (त्वचा), २. रसना (जीभ), ३. घ्राण (नाक), ४. चक्षु (आंख), ४. कर्ण (कान)।

संसारी जीव भी इन्द्रियों की अपेक्षा ५ प्रकारके होते हैं—एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पचेन्द्रिय जीव।

स्पर्शन इन्द्रिय—उसे कहते हैं जिसके द्वारा छूने से ठंडा, गर्म, रूखा, चिकना, हल्का, भारी, कड़ा, नर्म का ज्ञान हो।

जिन जीवों के केवल यह स्पर्शन इन्द्रिय होती है वे एकेन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और वनस्पति।

रसना इन्द्रिय—उसे कहते हैं जिसके द्वारा चखने से

http://www.jainkosh.org

खट्टा, मीठा, तीखा, कडुवा और कषायला रस (स्वाद) का ज्ञान हो।

जिन जीवों के स्पर्शन और रसना ये दो इन्द्रियां होती हैं वे द्वीन्द्रिय जीव कहलाते हैं—जैसे लट, केंचुवा, जौंक, शंख, कौड़ी, सीप वगैरह।

घ्राण इन्द्रिय—उसे कहते हैं जिसके द्वारा सूंघने से सुगन्ध तथा दुर्गन्ध का ज्ञान हो।

जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण ये तीन इन्द्रिय होती हैं वे त्रीन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे—चिउंटी, चिउंटा, बिच्छू, कान-खजूरा आदि।

चक्षु इन्द्रिय—उसे कहते हैं जिसके द्वारा देखने से काला, पीला, नीला, लाल और सफेद रंग का तथा इन रंगों के मेल से बने हुए नाना प्रकार के रंगों का ज्ञान हो।

जिन जीवों के स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु ये चार इन्द्रियां होती हैं वे चतुरिन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे—मक्खी, मच्छर, टिड्डी, भौंरा, ततइया आदि।

कर्ण इन्द्रिय—उसे कहते हैं जिसके द्वारा सुनने से आवाज जानी जावे।

जिन जीवों के पांचों इन्द्रियां होती हैं वे पंचेन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे—देव नारकी, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

जिन जीवों के जो इन्द्रिय ज्ञात हो उन जीवों के उससे

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

पहिले की इन्द्रियां अवश्य होती हैं और आगे की इद्रियां हों या न हों।

मुक्त अर्थात् सिद्ध भगवान् के कोई भी इन्द्रिय नहीं होती और न उनके शरीर होता है।

प्रश्नावली

१—इन्द्रिय किसे कहते हैं और इन्द्रियां कितनी हैं ? नाम बताओ।

२—इन्द्रियों की अपेक्षा संसारी जीव कितने तरह के हैं ? नाम बताओ।

३—केंचुआ, कानखजूरा, मच्छर, देव, हवा, कौआ, रेलगाड़ी ये कितनी इन्द्रिय वाले जीव हैं ?

४—रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं ? अग्नि के यह इन्द्रिय है या नहीं ?

५—कर्ण इन्द्रिय से तुम क्या जानते हो ?

६—जिस जीव के आंख होती है उसके नाक होगी या नहीं ?

७—जिस जीव के नाक होती है उसके आंख होगी या नहीं ?

८—मुक्त जीव के कितनी इन्द्रियां होती हैं ?

९—तुम्हारे कितनी इन्द्रियां हैं ? तीसरी इन्द्रिय का नाम बताओ।

१०—जन्म से अन्धे और गूंगे बालक के कितनी इन्द्रियां हैं ?

—:०:—

पाठ ४

त्रस जीवों की विशेषतायें

त्रस जीव ४ तरह के होते हैं—१. द्वीन्द्रिय, २. त्रीन्द्रिय, ३. चतुरिन्द्रिय, ४. पञ्चेन्द्रिय जीव।

पञ्चेन्द्रिय जीव दो तरह के होते हैं—१. संज्ञी (सैनी), २. असंज्ञी (असैनी)।

संज्ञी जीव—उन्हें कहते हैं जिनके मन हो जिससे शिक्षा उपदेश ग्रहण कर सकें। जैसे—देव, नारकी, मनुष्य, बैल, घोड़ा, कबूतर आदि सैनी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च।

असंज्ञी जीव—उन्हें कहते हैं जिनके मन न हो, जो शिक्षा उपदेश ग्रहण न कर सकें। जैसे जल में रहने वाले प्रायः सर्प, कोई कोई तोता आदि। असज्ञी पंचेन्द्रिय जीव केवल तिर्यञ्चगति में ही होते हैं।

असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीव के सिवाय एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव भी असंज्ञी कहलाते हैं। ये सब तिर्यञ्चगति में ही पाये जाते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च ३ प्रकार के होते हैं—१. जलचर, २. थलचर, ३. नभचर।

जलचर जीव—उन्हें कहते हैं जो जल में रहें। जैसे मगर मच्छ आदि। जलचर जीव जल से बाहर बहुत समय तक रहने पर जीवित नहीं रह सकते।

थलचर जीव—उन्हें कहते हैं जो जमीन पर चलें, उड़ न सकें। जैसे घोड़ा, बैल, हाथी, कुत्ता, चूहा आदि।

नभचर जीव—उन्हें कहते हैं जो आकाश में उड़ सकें। जैसे चील, कौवा, चिड़िया, कबूतर आदि।

प्रश्नावली

१—त्रस जीव कितने प्रकार के हैं ? नाम बताओ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

२—विकलत्रयके कितने भेद हैं ? नाम बताओ ।
३—संज्ञी जीव किसे कहते हैं और संज्ञी जीव के कितनी इन्द्रियां होती हैं ?
४—विकलत्रिय जीवों के मन होता है या नहीं ?
५—थलचर जीव किन्हें कहते हैं ? तुम कौन चर के जीव हो ?
६—चील, भौंरा, घोड़ा, स्त्री, मच्छ, पानी में डुबकी लगाने वाला लड़का ये कौन चर हैं ?
७—असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव किस किस गति में होते हैं ?
८—तुम सैनी हो या असैनी ? और वह क्यों ?

—:०:—

पाठ ५

गति

संसारी जीवों की अवस्था विशेष को गति कहते हैं ।

संसारी जीव ४ गतियों में होते हैं, वे गति ये है—१. नरक गति, २. तिर्यञ्च गति, ३. मनुष्य गति, ४. देव गति ।

गति की अपेक्षा संसारी जीव भी ४ तरह के होते है—१. नारकी, २. तिर्यंच, ३. मनुष्य, ४. देव ।

नरक गति—इस पृथ्वी के नीचे ७ नरक हैं, उनमें रहने वाले जीवों को नारकी या नरक जीव कहते हैं, उनको भारी दुःख सहना पड़ता है, ये जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं। नारकी जीवों की आयु कम से कम दस हजार वर्ष व अधिक से अधिक ३३ सागर का होती है ।

http://www.jainkosh.org

तिर्यंच गति—नारकी, देव और मनुष्यो को छोड़कर शेष सभी संसारी जीव तिर्यञ्च कहलाते हैं, उनकी गति को तिर्यञ्च गति कहते हैं ।

मनुष्य गति—पुरुष, स्त्री, बालक, बालिकायें आदि मनुष्य गति के जीव हैं। मनुष्य ही तपस्या ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं ।

देव गति—देव, हाड़, मांसरहित उत्तम शरीर वाले होते हैं, इन्हें सैंकड़ों और हजारों वर्षों में भूख लगती है, सो उस समय उनके कण्ठ में से अमृत झरता है जिससे उनकी भूख और प्यास शान्त हो जाती है, इन्हें उत्तम भोग और उपभोग की सामग्री मिलती है। जब कोई जीव मरकर देवों में जन्म ले तब देवगति का होना कहते हैं। देवों की आयु कम से कम दस हजार वर्ष की होती है व अधिक से अधिक ३३ सागर की होती है। देव १६ स्वर्गों में ऊपर के और विमानों तथा अन्य जगह भी उत्पन्न होते हैं ।

मुक्त अर्थात् सिद्ध भगवान् के कोई सी भी गति नहीं होती ।

प्रश्नावली

१—गति किसे कहते हैं व गति कितनी होती हैं ? नाम बताओ ।
२—जो इन गतियों में रहते हैं उनके क्या-क्या नाम हैं ?
३—नरक कहां पर है ? वहां सुख है या दुःख तथा वहां कितने दिन रहना पड़ता है ?

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

४—तिर्यंचगति किसे कहते हैं ? दस तिर्यंच जीवों के नाम लो ।

५—सबसे अच्छी गति कौनसी है और वह क्यों ?

६—देवों का सुख और शरीर कैसा होता है ? देव कहां रहते हैं ?

७—मुक्त जीव किस गति के जीव हैं ?

—:o:—

पाठ ६

भावना

एक बार अच्छा विचार करने को भावना कहते हैं।

ये भावना १२ होती हैं— १. अनित्य भावना, २. अशरण भावना, ३. संसार भावना, ४. एकत्व भावना, ५. अन्यत्व भावना, ६. अशुचि भावना, ७. आश्रव भावना, ८. संवर भावना, ९. निर्जरा भावना, १०. लोक भावना, ११. बोधिदुर्लभ भावना, १२. धर्म भावना।

बारह भावनाओं के पद्य (पं० भूधरदास जी कृत)

अनित्य भावना

दोहा

राजा राणा छत्रपति हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार ॥१॥

अशरण भावना

दल बल देवी देवता मात पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को कोई न राखनहार ॥२॥

संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुखी तृष्णावश धनवान्।
कहूं न सुख संसार में सब जग देख्यो छान ॥३॥

एकत्व भावना

आप अकेला अवतरे मरे अकेला होय।
यों कबहूं इस जीव को साथी सगा न कोय ॥४॥

अन्यत्व भावना

जहां देह अपनी नहीं तहां न अपना कोय।
घर संपति पर प्रगट ये पर हैं परिजन लोय ॥५॥

अशुचि भावना

दिपै चाम चादर मढ़ी हाड़ पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में और नहीं घिन गेह ॥६॥

आश्रव भावना

सोरठा

मोहनींद के जोर जगवासी घूमैं सदा।
कर्मचोर चहुं ओर सरवस लूटैं सुध नहीं ॥७॥

Report any errors at vikasnd@gmail.com

संवर भावना

सतगुरु देय जगाय मोह नींद जब उपशमै ।
तब कछु बनै उपाय कर्म चोर आवत रुकैं ॥८॥

निर्जरा भावना

दोहा

ज्ञान दीप तप तैल भर घर शोधै भ्रम छोर ।
या विध बिन निकसैं नहीं पैठे पूरब चोर ॥९॥
पंच महाव्रत संचरण समिति पंच परकार ।
प्रबल पंच इन्द्रियविजय धार निर्जरा सार ॥१०॥

लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ लोक पुरुष संठान ।
या में जीव अनादितैं भरमत हैं बिन ज्ञान ॥११॥

बोधिदुर्लभ भावना

धन कन कंचन राजसुख सबहि सुलभकर जान ।
दुर्लभ है संसार में एक यथारथ ज्ञान ॥१२॥

धर्म भावना

जाचैं सुरतरु देय सुख चिन्तत चिन्ता रैन ।
बिन जाचैं बिन चिन्तये धर्म सकल सुख दैन ॥१३॥

http://www.jainkosh.org

प्रश्नावली

१—भावना किसे कहते हैं ? भावना कितनी हैं ? नाम बताओ ।
२—अशरण, अन्यत्व, संवर, बोधिदुर्लभ भावना के पद्य बोलो ।
३—भावनाओं के पद्य किसने बनाये हैं ?
४—बारह भावना से जो तुम मतलब समझे हो अपनी भाषा में बताओ ।
५—किसी भी एक दोहे का अर्थ करो ।

—:※:—

पाठ ७

बालकों के लिए सोलह नियम

अच्छा और सुखमय जीवन बनाने के लिए इन नियमों का पालन करो:—

१. प्रात:काल जल्दी उठकर नमस्कार मन्त्र का जाप करना ।

२. शिक्षक, माता, पिता, भाई, गुरुजनों आदि को प्रणाम आदि करना ।

३. रोज का पाठ रोज ही पूरी तरह से याद कर लेना ।

४. चौबीस घंटे का लिखित ठीक प्रोग्राम बनाकर उसके अनुसार चलना ।

५. सबसे यथायोग्य विनयपूर्वक उत्तम से उत्तम बात बोलना ।

६. कम से कम एक धार्मिक ग्रन्थ का प्रतिदिन अध्ययन, मनन करना ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

७. हिंसारहित, सादा भोजन दिन में ही यथायोग्य कम से कम बार करके सन्तुष्ट रहना।

८. यथाशक्ति दीन दुःखी जनों का उपकार करते रहना।

९. पराई किसी भी वस्तु को नहीं चाहना, न उसकी आशा करना।

१०. गुस्सा घमण्ड मायाचार व तृष्णा से दूर रहने का भाव बनाना।

११. कारणवश कषाय अधिक न हो जाए, उस समय मौन रहना।

१२. सिनेमाघर, नाटकघर, वेश्यागृह आदि कुस्थानों में नहीं जाना।

१३. भंग, तम्बाखू, अफीम आदि नशीली चीजों का प्रयोग नहीं करना।

१४. चमड़े की वस्तु थैला, चैन, बक्स, टोपी, कोट आदि का उपयोग न करना।

१५. रेशमी बहुत पतला चटकीला वस्त्र नहीं पहिनना।

१६. आतिशबाजी, पटाखा बजाना आदि हिंसाजनक विनोद कभी भी नहीं करना।

मुद्रक—जमना प्रिंटिंग प्रेस, न्यू भगवत पुरा, मेरठ शहर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

प्रार्थना रूप में

http://www.jainkosh.org

परमात्म आरती

ॐ जय जय जय, नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु
णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

ॐ जय जय अविकारी ।

जय जय अविकारो, ॐ जय जय अविकारी ।
हितकारी भयहारी, शाश्वत स्वविहारी ॥टेक॥
काम क्रोध मद लोभ न माया, समरस सुखधारी । स्वामी सम०
ध्यान तुम्हारा पावन, सकल क्लेश हारी ॥ॐ॥१॥
हे स्वभावमय जिन तुमि चीना, भव सन्तति टारी । स्वामी भव०
तुम भूलत भव भटकत, सहत विपति भारी ॥ॐ॥२॥
परसम्बंध बंध दुख कारण, करत अहित भारी । स्वामी करत०
परमब्रह्म का दर्शन, चहुंगति दुखहारी ॥ॐ॥३॥
ज्ञानमूर्ति हे सत्य सनातन, मुनिमन संचारी । स्वामी मुनि···
निर्विकल्प शिवनायक शुचिगुण भण्डारी ॥ॐ॥४॥
बसो बसो हे सहज ज्ञानघन, सहज शांतिचारी । स्वामी सहज०
टलें टलें सब पातक, परबल बलधारी ॥ॐ॥५॥

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/

आत्मरमण

मैं दर्शनज्ञानस्वरूपी हूं, मैं सहजानन्द स्वरूपी हूँ ।।टेक।।
हूं ज्ञानमात्र परभावशून्य, हूं सहज ज्ञानघन स्वयं पूर्ण ।
हूं सत्य सहज आनन्दधाम, मैं सहजानन्द० । मैं दर्शन० ।।१।।
हूं खुदका ही कर्ता भोक्ता, परमें मेरा कुछ काम नही ।
परका न प्रवेश न कार्य यहां, मैं सहजानन्द० । मैं दर्शन० ।।२।।
आऊं उतरुं रमलूं निज में, निजको निजमें दुविधा ही क्या ।
निज अनुभवरससे सहजतृप्त, मैं सहजानन्द० । मैं दर्शन०।।३।।

मंगलतंत्र

ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शुद्धं चिदस्मि ।
मैं ज्ञानमात्र हूँ,
मेरे स्वरूप में अन्य का प्रवेश नहीं,
अतः निर्भार हूँ ।
मैं ज्ञानघन हूँ,
मेरे स्वरूप में अपूर्णता नहीं,
अतः कृतार्थ हूँ ।
मैं सहज आनन्दमय हूँ,
मेरे स्वरूप में कष्ट नहीं,
अतः स्वयं तृप्त हूँ ।
ॐ नमः शुद्धाय, ॐ शुद्धं चिदस्मि ।

Report any errors at vikasnd@gmail.com